ISSN 2348-3857

मालाणी का ऐतिहासिक कुआँ बाटाडु एवं उसका जल प्रबन्धक

डॉ. सुरेश कुमार चौधरी

सहायक आचार्य, इतिहास

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

मारवाड़ के राठौड़ वंश की एक शाखा रावल मल्लीनाथ के नेतृत्व में खेड़ आकर बस गये। मल्लीनाथ के वंशज रावल पताजी के नेतृत्व में सिणधरी ठिकाने के अन्तर्गत 84 गाँवों से राजस्व वसूली का सारा कार्य होता था। इन गाँवों में मुख्यत: बाटाडु, दाखा, होडु, नोसार, भोजासर, बायतु, आदि गाँव आते थे। सन 1947 में सिणधरी रावल गुलाबसिंह ने अकाल के कारण होने वाले लोगों के पलायन को रोकने के लिए ऐतिहासिक बायतु कुएँ का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवाया। ग्रामीणों से होने वाली वसूली के एक हिस्से में से कुँए के निर्माण का कार्य प्रारम्भ हुआ। पूर्ण कुँए के निर्माण में लगभग 3.5 लाख रुपये खर्च हुए। इसके निर्माण में 3 वर्ष का समय लगा। सन 1950 में इस ऐतिहासिक कुँए का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ। यह जलमहल चाँद की चाँदनी में अपनी छटा बिखेरते हुए अपने मनमोहक सोन्दर्य के कारण लोगों के आकर्षक का केन्द्र बना हुआ। बाटाडु कुँए का जल प्रबन्धन अपने आप में एक अनूठा उदाहरण है जो कि पश्चिमी राजस्थान में जल की कमी को ध्यान में रखकर किया। कुँए की कला स्थापत्य, जल प्रबन्धन तथा विभिन्न वर्गों के लिए जल भरने का स्थान सभी बातों को इस कुँए के निर्माण में विशेष ध्यान दिया गया है। यह पश्चिमी राजस्थान की अमूल्य धरोहर है।

मालाणी परगना राजस्थान के उतर-पश्चिम में स्थित क्षेत्र को कहा जाता था। यहाँ राठौड़ वंश की शाखा थी। मालाणी का क्षेत्रफल पूरे मारवाड़ के क्षेत्रफल के कुल हिस्से का पाँचवा भाग था। और मारवाड़ की जनसंख्या का बारहवां हिस्सा था। मालाणी की उतर से दक्षिण तक की सीमा 150 मील तथा पूर्व से पश्चिम की सीमा 120 वर्ग मील तक थी। उतर में शिव, शेरगढ एवं जैसलमेर रियासत से लगता था। पूर्व की ओर पचपदरा, सिवाणा और जालोर की सीमाएँ लगती थी। दक्षिण में सांचोर और पश्चिम में अमरकोट के साथ छाछरा, थारपारकर और सिंध मालाणी की सीमाएँ लगती थी। मालाणी कुल 8 ठिकानों में विभक्त थी, जिसमें मुख्य ठिकाने जसोल, बाड़मेर सिणधरी, नगर, गुड़ा, बैसाला, सियाना, सेतरावा, चौहटन व रामसर थे।[1] राठोड़ वंश की एक शाखा रावल-मल्लीनाथ के नेतृत्व में खेड़ में आकर बस गये, मल्लीनाथ के वंशज उतरोतर दो ठिकानों में विभक्त हुए, प्रथम ठिकाना जसोल एवं द्वितीय ठिकाना सिणधरी था। रावल पताजी को सिणधरी, ठिकाने के रुप में मिला' सिणधरी ठिकाने के अन्तर्गत 84 गाँवों के पट्टे का कार्य होता था। इस 84 गाँवों से राजस्व वसूली का सारा कार्य ठिकानेदारों के नेतृत्व में होता था।[2] ठिकानेदारों द्वारा ''धापा'' नामक लगान लोगों से वसूल किया जाता था।[3] सिणधरी ठिकाने के अन्तर्गत मुख्यत: बाटाडु, दाखा, होडु, नोसर, भोजासर, बायतु आदि गाँव आते थे'।

रावल पताजी सिणधरी ठिकाने के संस्थापक ठिकानेदार थे।[4] रावल पताजी के वंशज रावल गुलाबसिंह ने बाटाडू में एक कुएँ के निर्माण की योजना बनाई। बाटाडु गाँव सिणधरी ठिकाने के अन्तर्गत आता था। वर्तमान बाड़मेर जिले के बायतु तहसील की ग्राम पंचायत बाटाडु है। यह जिला मुख्यालय से 56 किलोमीटर तथा तहसील मुख्यालय से 35 किलोमिटर की दूरी पर स्थित है। सन् 1947 ई. में मालाणी क्षेत्र में भंयकर अकाल पड़ा। पशुओं के चारे एवं लोगो के खाने के लाले पड़ गये। ऐसी स्थिति में लोग अपनी रोजी-रोटी की तलाश में बाहर पलायन के लिए मजबूर हुए। बाटाडु के लोग भी पलायन करने लगे। यहाँ पर दूर-दूर तक पीने का पानी भी उपलब्ध नहीं था।[5] कहा जाता है कि शेरगढ़ निवासी बांकाराम सुथार अकाल से परेशान होकर अपनी रोजी-रोटी कमाने सिंध जा रहा था। तब उनके काफिले ने रात्रि-विश्राम बाटाडु नाडी की पाल पर लिया' सुबह जब बांकाराम सुथार उठा तो उसने नाडी (तालाब) में कुछ कबूतरों को उड़ते हुए देखा। पौराणिक मान्यता

ISSN 2348-3857

के अनुसार यह प्रचालित है कि कबूतरों का निवास रेगिस्थान में कुएँ की गहराई में होता है। तब वे नाडी में गये, यहाँ उन्हें एक पौराणिक कुआँ मिला। उन्होंने उस कुएँ से अपने ऊँटो तथा साथियों के लिए पानी सींचा और सभी की प्यास बुझाई। आज भी उस पौराणिक कुएँ को बांकिया कुएँ के नाम से सम्बोधित करते है। जिसे शेरगढ निवासी बांकाराम सुथार ने खोजा। यह ऐतिहासिक कुआँ बाटाडू के कुएँ पास स्थित है।[6]

मालाणी परगना री राठौड वंशावली

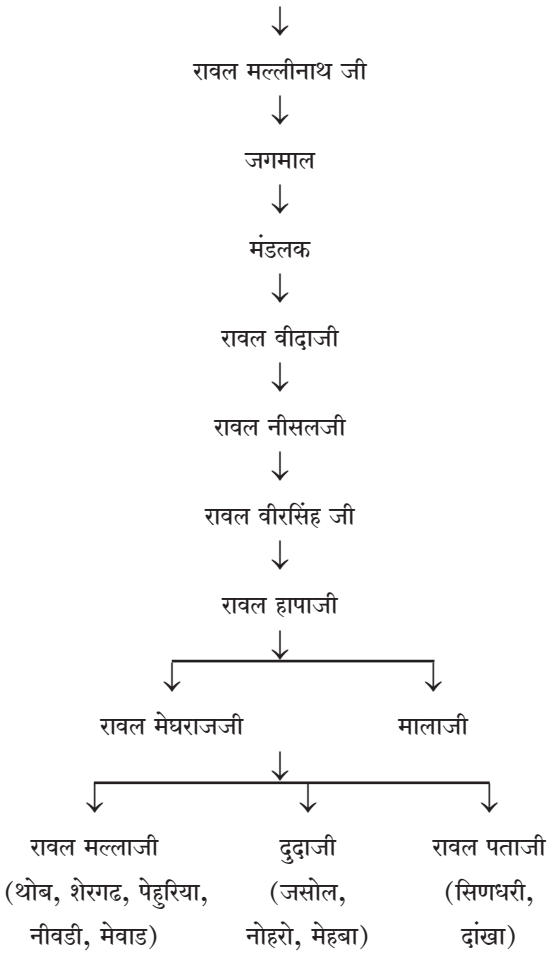

सन् 1947 ई. में सिणधरी रावल गुलाबसिंह ने अकाल के कारण होने वाले लोगों के पलायन को रोकने के लिए, पौराणिक बांकिया कुएँ के पास, ऐतिहासिक बाटाडु कुएँ का निमार्ण कार्य प्रारम्भ करवाया। निर्माण कार्य के लिए धन की व्यवस्था, ग्रामीणों से होने वाली वसूली के एक हिस्से में से की गई। लेकिन यह धन पर्याप्त नहीं था। अत: रावल गुलाबसिंह द्वारा इस पुण्य कार्य के लिए चंदा भी एकत्रित किया गया। इस कुएँ के निमार्ण में लगभग 3 लाख 50 हजार रुपये खर्च हुए। तथा इसके निमार्ण कार्य में लगभग 3 वर्ष का समय लगा। सन् 1950 में कुएँ का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ।[7] बाटाडु कुएँ का निर्माण जोधपुर व सिणधरी के सुथार स्थापत्यकार, बाटाडु व चॉडों की ढाणी के प्रजापत कारीगरों एवं जाट जाति के मजदूरों द्वारा किया गया। मेघाराम जी मुढ़, जो बाटाडु के पूर्व सरपंच थे। जिनका मौखिक वृतान्त सन्दर्भ में लिया गया है। उन्होंने भी मजदूर के रुप में अपना योगदान कुएँ निर्माण प्रक्रिया में दिया। सन् 1950 में रावल गुलाब सिंह एवं समाजसेवी दुर्गाराम सियाग के कर-कमलों द्वारा कुएँ की पूजा-अर्चना कर ग्रामीणों एवं पशुओं के लिए पानी निकालकर कुएँ की सिंचाई शुरु की गई।

यह कलात्मक कुआँ चाँद की चाँदनी में अपनी छटा बिखेरते हुए अपने आकर्षक सौदर्य के कारण लोगों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। पूर्णतया संगमरमर का बना यह कुआँ एक दर्शनीय स्थल के साथ-साथ पूजनीय स्थल भी है। प्रत्येक सोमवार को यहाँ शिव पूजा का प्रचलन है। वर्तमान में इस कुएँ की देखभाल का कार्य गोपाल गौशाला सेवा संस्थान बाटाडु के सचिव जोगाराम जी जाँगिड़ एवं समाज सेवी चोखाराम जी मुढ द्वारा की जाती है। कुएँ के निर्माण के पश्चात् रावल गुलाबसिंह ने ग्रामीणों से वसूली (हासल) भी बन्द कर दी तथा वे सिणधरी चले गय।

बाटाडु कुएँ का स्थापत्य एवं जल-प्रबन्ध

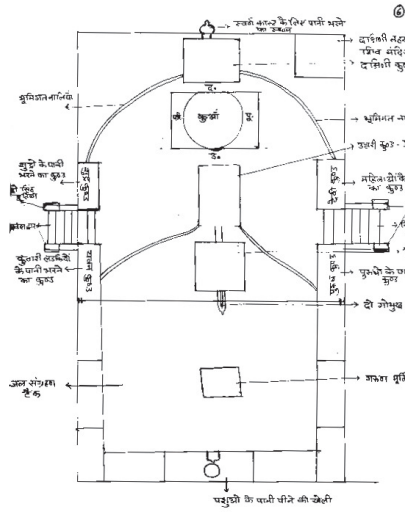

* बाटाडु कुएँ का रेखाचित्र एवं जल-प्रबंधन *

बाटाडु कुएँ की लम्बाई 60 फीट, चौडाई 35 फीट, ऊँचाई 6 फीट तथा गहराई 80 फीट है इसकी उतर दिशा की तरफ एक बड़ा कुण्ड बना हुआ है, जिसकी गहराई 5 फीट है। उत्तरी जल कुण्ड के मध्य एक संगमरमर का बना गरुण स्तम्भ है। स्तम्भ पर गरुण प्रतिमा की ऊँचाई 11 फीट एव चोड़ाई 8 फिट है। जिस पर गरुण देवता विराजमान है' कुएँ का ऊपरी हिस्सा 5 फिट संगमरमर पत्थर से बना है।[9]

कुएँ पर जाने के लिए सीढ़ीनुमा मुख्य द्वारा एवं सीढ़ीनुमा निकास द्वार बना हुआ है। दोनों द्वारों पर दो-दो सिंह प्रतिमाएँ लगी हुई है। मुख्य द्वार पश्चिम तथा निकासी द्वार पूर्व में स्थित है।' कुएँ के चारों तरफ श्लोकों के साथ ही गायों के रक्षक पाबुजी राठौड़, राजा दिलिप, कृष्ण लीलाओं के चित्र, गुऊ दतात्रेय, मीरा, राजा गोपीचन्द, नवदैवीय रथ, शिव हलाहल पान करते हुए तथा कई देवी-देवताओं की मूर्तियों का अंकन किया गया हैं। इनमें रामायण एवं महाभारत के भी कुछ अंश उत्कीर्ण हैं। इनमें मूतियों में कलात्मक स्थापत्य की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। कुएँ के दक्षिण में एक तहखाना बना है, जहाँ शिव मन्दिर होने के प्रमाण दिखाई देते हैं। शिव लिंग के कुछ अवशेष अवश्य ही दिखाई पड़ते हैं।[10] बाटाडु कुएँ से पूर्व एवम् पश्चिम दोनों दिशाओं से पानी को सींचा जाता था' पानी को कुएँ से निकालने के लिए छड़ों[12] का प्रयोग होता था। इन छडों को वरत (रस्सियाँ) से बाँधा जाता था। वरत (रस्सियों) को बैलों तथा ऊटों से बाँधकर पानी बाहर खींचते थे। छडें जब कुएँ से बाहर निकलती थी तो लोगों द्वारा उसे उत्तरी कुण्ड-1 एवं दक्षिणी कुण्ड में खाली कर दिया जाता था।

दक्षिण कुण्ड से पानी कुएँ की परिधि से गौमुख द्वारा बाहर निकलता था। जहाँ पर स्वर्ण जातियों द्वारा पानी भरा जाता था। इनमें ब्राह्मण, राजपुरोहित, राजपूत, सोनी, जाट, आदि थे। दक्षिणी कुण्ड से दो भूमिगत नालियाँ, जो क्रमश: शुद्र कुण्ड एवं देवी कुण्ड में जाकर खुलती थीं। शुद्र कुण्ड से नीची समझी जाने वाली जातियाँ पानी भरती थीं। ये जातियाँ क्रमश: भिल, मेघवाल, चरमार ढाणी आदि थीं। देवी कुण्ड से ग्रामीण महिलाएँ पानी भरती थीं। छड़ों को जब उतरी कुण्ड-1 में खाली किया जाता था तब उत्ररी कुण्ड-1 से तीन भूमिगत नालियाँ निकलती थीं। ये तीनों नालियाँ क्रमश: यवन कुण्ड, पुरुष कुण्ड एवं उत्ररी कुण्ड-'2 में खुलती थीं। यवन कुण्ड से ग्रामीण कुँवारी लड़कियाँ पानी भरती थीं।[13] पुरुष कुण्ड से गांव के पुरुष पानी भरते थे उतरी कुण्ड-2 में दो नालियाँ क्रमश: ऊपरी नाली एवम् निचली नाली बनी हुई थी। जो संग्रहण टैंक में गौमुख द्वारा खुलती थी। अत: उतरी कुण्ड-2 का पानी सीधा जल-संग्रहण टैंक में एकत्रित हो जाता था।

जल संग्रहण टैंक के तीनों तरफ पशुओं के पानी पीने की खेली बनी हुई थी। यवन कुण्ड एवं पुरुष कुण्ड से एक-एक नाली निकलकर पशुओं के पानी पीने की खेली में खुलती थी। जहाँ पशुओं के पीने का पानी भरा रहता था। जल संग्रहण टैंक से भी एक बड़ी नाली पशुओं के पानी पीने की खेली में खुलती थी। पशुओं की खेली के उत्तर की तरफ जमीन में एक बड़ा छिद्र दिखाई देता है। जो सम्भवत: अनावश्यक जल को पुन: भूमिगत कर देता था।[14] आजादी के पश्चात भी मालाणी क्षेत्र पानी की समस्या से भंयकर त्रस्त था। ठाकुर गुलाबसिंह द्वारा निर्मित बाटाडु कुएँ के आस-पास लगभग 25-30 किलोमीटर में यह पानी का एकमात्र स्त्रोत था। अत: एक दर्जन गाँव बाटाडु, सिंगोडिया, भीमड़ा, झाक, मौखाब, पोषाल खीम्पर, लुनाडा, कोलू, किशने का तला, कानोड, शहर, चौखला, माडवा आदि लोग प्यास बुझाने के लिए पानी का उपयोग यहीं से करते थे।[15] बाटाडु कुआँ एक ऐतिहासिक धरोहर है जिसका संरक्षण अति-आवश्यक है। सरकारी संरक्षण द्वारा इस ऐतिहासिक धरोहर को बचाया जा सकता है। आजादी के पश्चात् जल-प्रबधन का अपने आप में यह एक अनूठा उदाहरण है। जो अन्यत्र कहीं नहीं मिलता है।

सन्दर्भ सूची

1. सिंह, मुशी हरयाल, ब्रीफ एकाऊट ऑफ मालाणी, फाइल नं. 203, पृ. 35
2. भदानी, डॉ. बी.एल., ख्यात, जसोल ठिकाना, पृ. 54
3. भदानी, डॉ. बी.एल., जसोल, ठा. नाहरसिंह, जसोल का इतिहास, पृ. 9
4. मारवाड़ के राठौडों का वंशावली चार्ट
5. मूढ, ओ.पी., ऐतिहासिक कुआँ बाटाडु, पृ. 11-12
6. मूढ, मेघाराम जी, पूर्व संरपच बाटाडु, मौखिक वृतांत
7. श्री गोमाराम, ऐतिहासिक कुआ बाटाडु, पृ. 8-9
8. सुथार, श्री जोगाराम, सचिव, गोपाल गौशाला सेवा संस्थान, मौखिक वृतांत
9. चौधरी, डॉ. एस.के., स्वयं दृष्टांता
10. मूढ, ओ.पी., ऐतिहासिक कुआँ बाटाडु, पृ. 12
11. चौधरी, डॉ. एस.के., बाटाडु जल प्रबंधन, कुएं का रेखाचित्र
12. छड-चमड़े का बना बड़ा पात्र, जिससे पानी कुएँ से बाहर निकाला जाता हैं।
13. यवन इतिहास में यवन शब्द विदेशियों के लिए प्रयुक्त हुआ है लेकिन पश्चिमी राजस्थान में यह कुंवारी लड़कियों के सन्दर्भ में है।
14. चौधरी, डॉ. एस.के., स्वयं दृष्टांता एवं व्याख्या
15. मूढ, ओ.पी., ऐतिहासिक कुआँ बाटाडु, पृ. 12